

सकारात्मक तथ्यों के प्रसारण हेतु मीडिया सामूहिक रूप से प्रयास करे - खरे



जबलपुर। मीडिया सेमिनार में मंचासीन हैं अतुल खरे, विमलकांत येन्डे, धीरेन्द्र पाठक, ब्र.कु.शांतनु, ब्र.कु.सुशांत, ब्र.कु.विमला बहन तथा अन्य।
जबलपुर, कटंगा। ब्रह्माकुमारीज की स्थानीय सेवाकेंद्र द्वारा 'समाज उत्थान के लिए मीडिया की पहल' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसे सम्बोधित करते हुए जनसम्पर्क एवं प्रकाशन विभाग के संयुक्त संचालक अतुल खरे ने कहा कि मीडिया संपादकों तथा मालिकों को सकारात्मक तथ्यों को प्रसारित करने के लिए सामूहिक रूप से प्रयास करना चाहिए तभी मीडिया सकारात्मक बनेगी।

प्रेम और दया में अनंत ऊर्जा

जब भी आपको मुश्किलों और अंतर्विरोधों का सामना करना पड़े, तो उन्हें तोड़ने की नहीं प्यार, दया और विनम्रता से मोड़ने की कोशिश करो। उन्हें ठीक होने का समय दो। उस स्पेस में आपके जीवन में एक अलग किस्म की ऊर्जा का प्रवाह होगा। दो तरह की ऊर्जाएं होती हैं। एक साधारण ऊर्जा, जो हमारे अहंकार को बल प्रदान करती है, और भ्रमक लक्ष्य हमारे सामने रखती है। दूसरी, दिव्य ऊर्जा है, जो अहंकार को खत्म करती है, हल्का करती है। यह जीवन को देखने का एक अलग ढंग देती है। हमारे भीतर तीन केंद्र होते हैं, जिनका हमें सामंजस्य करना होता है। ये तीन केंद्र हैं - शरीर, भाव और बुद्धि। जब ये तीनों केंद्र हमारे दैनिक जीवन में एक साथ कर्मरत होंगे, तो एक दैवी ऊर्जा प्रवाहित होगी। जब आप सुकून में आराम में होते हो, तो तुम्हारे शरीर में स्वास्थ्यकारी रसायनों की उत्पत्ति होती है, जबकि तनाव में अस्वास्थ्यकारी तत्व शरीर में फैलने लगते हैं। इसलिए आराम में सुकून में रहना सीखो। चार लोग एक जहाज पर सवार थे। एक पायलट, एक राजनेता, एक अध्यापक और एक विद्यार्थी। बीच हवा में पायलट ने घोषणा की कि 'जहाज में कुछ समस्या है और हमारे पास सिर्फ तीन पैराशूट हैं और मैं एक महत्वपूर्ण आदमी हूँ' उसने एक पैराशूट लिया और कूद गया। राजनेता ने जैसे ही यह सुना, वह भी यह कहते हुए कि 'मैं भी महत्वपूर्ण हूँ' दूसरा पैराशूट लेकर कूद गया। अध्यापक ने विद्यार्थी से कहा कि 'मैं तो अपना जीवन जी चुका हूँ, इसलिए तुम यह आखिरी पैराशूट ले लो और अपनी जान बचाओ।' विद्यार्थी ने कहा, गुरुजी, यहां अभी भी दो पैराशूट हैं और हम दोनों बच सकते हैं। अध्यापक ने चकित होकर कहा, ऐसा कैसे हो सकता है। दो तो पहले ही कूद चुके हैं। इसलिए अब यहां एक ही बचा होगा। विद्यार्थी ने जवाब दिया, गुरु जी, राजनेता बहुत जल्दी में था, वह मेरा स्कूल बैग लेकर कूद गया। जब आप तनाव में होते हो, तो आपको बेअसर करने वाले अनेक कारण

ब्र.कु.शांतनु ने कहा कि मीडिया में दी जा रही नकारात्मक खबरें सामाजिक उत्थान में बाधक है। राजयोग का नियमित अभ्यास हमें मानसिक रूप से सशक्त बनाता है।

मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.सुशांत ने कहा कि समाज के उत्थान के लिए व्यक्ति की सोच, विचार, चरित्र एवं जीवन प्रणाली को सकारात्मक एवं श्रेष्ठ बनाना आवश्यक है। जिसके लिए आध्यात्मिक ज्ञान, मानवीय मूल्यों को जीवन में आत्मसात करना एवं राजयोग का अभ्यास करना नितांत आवश्यक है।

स्थानीय सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु.विमला बहन ने कहा कि मीडिया ही एक ऐसा प्रभावी माध्यम है जो व्यक्ति को प्रेरणा देने एवं समाज के परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

इस अवसर पर अनेक पत्रकार एवं शहर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु.आरती बहन ने किया।

प्रकट हो जाते हैं। सो, हर काम करते हुए अपने शरीर को शांत रखना सीखो। अपनी तमाम भावनाओं में प्रेम और दयालुता को समाहित करना सीखो। एक प्रवाहमान ऊर्जा आपके भीतर है। अपने हर कार्य व्यवहार में उस ऊर्जा को लाओ। इस प्रवाहमान ऊर्जा को बनाये रखने के लिए विशेष रूप से दो समय हैं। इनमें सबसे अच्छा समय है सुबह का। यदि हम सुबह जल्दी उठने की आदत बना लें और अपने साथ आत्मसात करते हुए उन दिव्यगुणों, शक्तियों और योग्यताओं पर विचार मंथन करें अर्थात् अपनी ऊर्जा को परिपक्व बनाने की आदत डालें। सुबह उठते के साथ पहले 10 मिनट इसका अभ्यास करें। दूसरा सायं को जब सूर्यास्त हो जाता है। अपने उन उन्नत विचारों को अपने श्रेष्ठ मंजिल को देखें। स्वपन को साकार होते हुए देखें, ऐसा पंद्रह मिनट अपने आपमें विचारों को एकाग्र करने पर वह ऊर्जा उन्नत बनी रहेगी। समय पर इस ऊर्जा को कार्य में लगाने पर कामयाबी मिलेगी। तो आज के दौर में हम ऊर्जा के प्रयोगी बनें।

मन पर नियंत्रण करने पृष्ठ 2 का शेष कर्मइन्द्रियों घोड़ा समान है। बुद्धि सारथी है.. और सारथी के पास लगाम है। लगाम द्वारा घोड़ा को काबू में रख सकते हैं। कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन के रथ पर हथियार बिना सवार श्रीकृष्ण सारथी के रूप में अंतिम दिन तक रथ का संचालन किया और अंत में विजयी हुआ। प्रथम अध्याय में भ्रमित हुई उनकी बुद्धि विषाद में डूब गई तब कृष्ण ज्ञान-कर्म से क्षत्रिय धर्म समझाया और धर्म-युद्ध सफलतापूर्वक पार किया। सदा याद रहे कि सतकर्म और सतसंग द्वारा ही मन को सदा शुद्ध रख सकते हैं। इसलिए मन को सदा सतसंग में बीजी रखना चाहिए। साधक को तो सदा ही उन्हें सत्कार्य में बीजी रखना चाहिए। मन को छूट नहीं देना चाहिए। मन अंतःकरण आत्मा के विवेक से ही चलाना चाहिए अर्थात् दिव्य बुद्धि से ही चलाना चाहिए। बुद्धि निर्णय ले मन नहीं। यही स्थिति सर्वोच्च है। भगवान ने कहा है कि श्रेष्ठ भाव से मेरे अंतःकरण से जुड़े हुए ही श्रेष्ठ योगी है। बुद्धि जब श्रेष्ठ बनती है तब आध्यात्मिक मार्ग भी सरल बनता है। और अंत में परम शांति को पाता है।



प्रेम नगर, इंदौर। अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.शशी बहन।



वल्लभ नगर, कोटा। महापौर एस.टी.रत्ना को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.ज्योति बहन।



नरसिंहपुर। जिलाधिकारी संजीव सिंह को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.प्रीति बहन।



रामवाग। प्रसिद्ध उद्योगपति सुरेश सहारा को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.छाया बहन।



राजेन्द्र नगर। पूर्व डी.एस.पी. मीना को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.रक्षा बहन।



सुवासरा। विधायक राधेश्याम पाटीदार को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.श्यामा बहन।



विलहरी, जबलपुर। 'रक्षाबंधन' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के जवानों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.बाला बहन।



कालानी नगर। कुष्ठ रोगियों को 'रक्षाबंधन' का संदेश देने के पश्चात् 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.सुजाता बहन एवं ब्र.कु.कविता बहन।